[हिंदी में डाउनलोड करने के लिए यहां क्लिक करें]

(Click here to download in Hindi)

कार्य करने की क्षमता

साधकों को शत शत नमन

प्रस्तावना

यूजीन वर्मा

प्राचीन काल से ही, मनुष्य ने अपने तात्कालिक वातावरण के निकट संपर्क में रहते हुए प्रकृति में उपलब्ध चीज़ों पर ध्यान केंद्रित किया है। सर्वोत्तम अनुकूलन क्षमता रखने वाली मानव जाती दुनिया भर में फैली हुई है। **युवल नूह हरारी** द्वारा **'सेपियन्स'** (**हरारी वाई. एन., 2017**) ने इस तथ्य में योगदान भी दिया है कि 'आधुनिक मनुष्य खुद में ही तेजी से तरक्की करने में सक्षम हैं, जो वो कर भी रहा है।' इसमें भाषा और संचार की काफी महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे समाजीकरण और व्यवहार में बहुत से बदलाव आये, साथ ही मनुष्यों ने अधिक उद्देश्यपूर्ण तरीके से कार्य करना, योजनाएँ बनाना और सहयोग के माध्यम से नई तकनीकों और रणनीतियों का विकास करना सीखा। पर्यावरण अग्रणी रहा और मनुष्य अपने विकास का अनुसरण करता चला गया ।

औद्योगिक क्रांति के बाद से, इन अनुकूल कौशलों को तेजी से अपनाया गया । इस जलवायु में, बढ़ती वैश्विक जनसंख्या के बीच रहते हुए, हमें पर्यावरण से संबंधित कई जटिल मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है जैसे अपर्याप्त भोजन, पर्यावरण प्रदूषण, कार्य अनुपलब्धता आदि । इस दृष्टिकोण को इस तथ्य ने और अधिक कठिन बना दिया गया है कि 'एक साथ सोचना और काम करना मूल रूप से भिन्न सामाजिक और आर्थिक हितों से ढका हुआ है'। हमारे द्वारा लाए गए विकास तथा परिवर्तनों की गति और जटिलता, इस बात को साबित करती है कि हम नई और गहन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हमारे सोचने के प्रतिरूप और तरीकों को अपनाने के जगह, हमें खुद को उत्तेजक और कौशल रुप से विकसित करने की ज़रूरत है । क्या हम अपने स्रोत के साथ अपनी सोच और अभिनय को नियंत्रित करने में सक्षम हैं? हमारे पर्यावरण, हमारे विकासवादी विकास में स्वयं को पुनर्निर्देशित करने के लिए, इस विकास वादी प्रक्रिया में एक रचनात्मक कदम आगे बढ़ने के लिए क्या आवश्यक है? एक दूसरे के साथ हम इस बारे में बातचीत कैसे करें? हमें अपने रहने वाले पर्यावरण की खोज करने के अपने मूल उद्देश्यों के लिए, सोच और अभिनय की भूमिका में वापस जाना होगा। हमें किस चीज़ जरूरत है? हम खुद क्या कर सकते हैं?

अलग और प्रामाणिक होने का साहस जगाओ। अपनी सहज प्रवृत्ति से, हम शुरू से ही समूह और उसके परिचित प्रतिरूप में सुरक्षित रहना चाहते हैं, उसी समूह में विलय करना चाहते हैं। अलग होने का साहस करने और खुद को अलग करने की हिम्मत करने के लिए प्रतिभा और प्रबल प्रेरणा की आवश्यकता होती है । प्रामाणिक और स्वायत्त सोच से, हम अपने आप में महत्वपूर्ण सोच को सक्रिय करने और समूह धारणाओं और प्रभाव से विचलित होने में सक्षम हो सकते हैं। अपने आस-पास की दुनिया के बारे में रचनात्मक सोच के माध्यम से हम अपने आप को दमनकारी समूह दबाव और सामूहिक धारणाओं से बेहतर ढंग से मुक्त कर सकते हैं, जो नवीकरण और परिवर्तन के लिए एक खुले दिमाग वाले दृष्टिकोण को बाधित कर सकते हैं।

यदि हम नए रास्ते तलाशना चाहते हैं, तो हमें खुद को कमजोर होने देना होगा, असफलता का जोखिम उठाने के लिए पर्याप्त साहसी होना होगा और **'बी ब्राउन (बी)'** द्वारा **ब्राउन, (2012)** नाम की पुस्तक में वर्णित भेद्यता की शक्ति का उपयोग करना होगा। यह तलाशने, दूसरे दृष्टिकोण से देखने, दूसरे को ईमानदारी से सुनने का आधार बनाता है। तभी हम अलग होने और अलग तरह से सोचने के डर के बिना अपनी वास्तविक भावनाओं का अधिक गहराई से आदान-प्रदान कर सकते हैं। "**दुनिया को सुधारो, एक**

सवाल पूछो!" **रटगर ब्रेगमैन** की पुस्तक **"द ह्यूमन काइंड" (आर। ब्रेगमैन, 2019)** में वर्णित नियमों में से एक है। समकालीन परिप्रेक्ष्य अकसर लचीलापन और उपलब्धि, लाभ और विकास, प्रभुत्व और व्यक्तिगत लाभ आदि पर केंद्रित होता है। यह दूसरों की कीमत पर निर्णय और विकास की संस्कृति की ओर जाता है। यह सहयोग, प्रामाणिक और स्वायत्त सोच को उत्तेजित करके सामान्य हित से विकास नहीं है, बल्कि दूसरे और हमारे परिवेश की कीमत पर विकास है। यह सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से प्रेरित रवैया अपरिवर्तनीय रूप से व्यक्तियों और समूहों को पारस्परिक संबंधों की ओर ले जाता है। हमें केवल भिन्न समाजों में अक्रियाशीलता, तनाव, चिंता आदि के बढ़ते आंकड़ों को देखना है। लोगों के बीच निहित, कठोर और थोपी गई धारणाओं के आधार पर अर्थहीन लड़ाइयां लड़ी जा रही हैं। यह समायोजन का समय है - एक प्रतिमान बदलाव - जिसमें संचार, नैतिकता, रचनात्मकता, आलोचनात्मक और स्वायत्त सोच पर ध्यान दिया जाता है, जो हमारे पर्यावरण और हमारे साथी आदमी के साथ ईमानदारी से बातचीत में निश्चित धारणाओं से मुक्त है।

इस पुस्तक के द्वारा हम पाठक के साथ एक संवाद में प्रवेश करना चाहते हैं, आपकी सोच, अभिनय और आपकी कार्य करने की क्षमता में आपको साझा और चुनौती देना चाहते हैं। दूसरे के परिप्रेक्ष्य पर केंद्रित, स्वयं के विकास के लिए एक मार्गदर्शक किताब; दूसरे के माध्यम से खुद तक पहुँचना। यदि हम इसकी आवश्यकता को महसूस करते हैं और इसे पालन-पोषण, शिक्षा और सहयोग में सुदृढ़ करने में सक्षम हैं, तो हम उभर सकते हैं। यह रास्ता परिवर्तन की ओर पहला कदम होगा। इस पुस्तक के साथ, हम संवाद में संलग्न करने के लिए विभिन्न विषयों के विभिन्न दृष्टिकोणों को उजागर करना चाहते हैं।

प्रस्तावना

बर्ट ज़्वानेवेल्ड

२०२० की गर्मियों के दौरान, जब पहली कोरोना-लहर खत्म हो गई थी, **रविश सेंगर्स** ने कई लोगों से पूछा कि क्या वो किसी ऐसी पुस्तक में योगदान देना चाहेंगे जो:

- सार्वजनिक बहस के लिए निर्देशित है, और व्यापक दर्शकों के उद्देश्य से है।
- जिसमें एक दस्तावेज होगा जो आज की सबसे बड़ी समस्याओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा
- जो दिखाता है कि इन समस्याओं को सामान्य तथा वैकल्पिक तरीके से हल किया जा सकता है।

अभी इस पुस्तक का हर पाठक ये पूछ रहा होगा: 'तो फिर ये समस्याएँ क्या हैं?'

हमारा समाज बहुत सारी समस्याओं से जूझ रहा है। निम्नलिखित, उन कई समस्याओं में से कुछ की एक झलक है:

- **2008-2014** का **वित्तीय** संकट, या **2020** में शुरू हुआ **कोविड-19** संकट
- उदाहरण के लिए, अनिश्चितता के लोग ऐसे संकट या जलवायु परिवर्तन के परिणाम को महसूस करते हैं
- काम पर या समाज में प्रबंधन के दृष्टिकोण से प्रेरित लोगों के जीवन पर नियंत्रण का खोना
- सरकार का नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार , जिससे दोनों के बीच की खाई गहरी हो रही है
- समाज को एक बाजार के रूप में देखना, जिसका अर्थ अक्सर सरकार को वापस लेना होता है
- अधिक व्यक्तिवाद, जो कई बार समाजों को विभाजित करता है।

ऐसा लगता है जैसे लोगों की नैतिकता दिन प्रतिदिन घटती ही जा रही है । अब लोगों के व्यवहार उच्च मूल्य से निर्देशित नहीं होता। इस पुस्तक के अध्यायों के लेखक आश्वस्त हैं कि स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारे समाज के मूलभूत पहलुओं पर फिर से विचार करने की आवयश्यकता है । यहाँ ध्यान केंद्रित करने वाला शब्द है: समुदाय। एक समुदाय में हर कोई दूसरों की खुशी में अपना योगदान दे सकता है और ऐसा करके उसे खुद भी काफी ख़ुशी मिलती है । दूसरे शब्दों में: बहिष्करण नहीं, बल्कि विचारों का आदान-प्रदान।

हमारे समाज में लोग और पर्यावरण दोनों शामिल हैं। लोगों के जीवन का संदर्भ समाज का एक अंतर्निहित हिस्सा है। परिणामस्वरूप, परिवर्तन की प्रक्रिया में, पर्यावरण के भौतिक पहलुओं के साथ हमारे संबंध का भी एक महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए।

दृष्टिकोण में बदलाव के अलावा, यह भी सोचना आवश्यक है कि ऐसा करने के लिए कौन से ज्ञान और कौशल उपयुक्त हैं।

इस पुस्तक के सभी अध्यायों में लेखक अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्रों की समस्याओं का विश्लेषण करते हैं, उनके विश्लेषण पर चर्चा करते हैं और ठोस समाधान के लिए दिशा-निर्देश देते हैं। विश्लेषण विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला से आते हैं: दर्शन, अर्थव्यवस्था, नैतिकता, (स्व-) संगठन, नवाचार, मनोविज्ञान और शिक्षा, विशेष रूप से विश्वविद्यालय (अनुप्रयुक्त विज्ञान के) स्तर पर।

इस बात का अंदाजा देने के लिए की आप क्या उम्मीद कर सकते हैं, हम यहां दस अध्यायों के कुछ बहुत ही संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करते हैं।

<u>अध्याय 1</u>

ये **इरविन सेंगर्स** द्वारा **'गेब्रियल वैन डेन ब्रिंक'** का एक साक्षात्कार है। यह अनेक प्रकार के सवालों पर **वैन डेन ब्रिंक** के विचारों को दिखाता है जैसे: अभिनय करना मुश्किल क्यों है? अभिनय में भाषा की क्या भूमिका है? अभिनय में अन्य लोगों की कहाँ और कब आवश्यकता होती है? अभिनय में जड़ता को कोई कैसे दूर कर सकता है? क्या होगा अगर सामूहिक कार्रवाई के अलावा सामूहिक शक्तिहीनता भी हो? प्रस्तुत विचार कितने वास्तविक हैं? शिक्षा की क्या भूमिका है? **वैन डेन ब्रिंक** और **सेंगर्स** कार्य निर्देशित दृष्टिकोण प्रदान करना चाहते हैं। वे **मोबाइल प्रौद्योगिकी** के विशाल उपयोग पर विशेष ध्यान देते हैं जिससे लोगों के **संचार पर रुकावटें** आ सकती हैं।

<u>अध्याय 2</u>

इस अध्याय, '**एक प्रतिमान बदलाव का समय**' में **लीन पापे** विश्लेषण करते हैं कि **आर्थिक प्रतिमान** जिस पर अधिकांश देश भरोसा करते हैं, जिसे **'नव-उदारवाद'** के रूप में संक्षेपित किया जा सकता है, अब टिकाऊ नहीं है। यह प्रतिमान समृद्धि और विकास तो लाया, लेकिन इसके हानिकारक प्रभाव भी हैं। जलवायु परिवर्तन, घटती जीव विविधता और लोगों के समूहों के बीच बढ़ती असमानताओं के सामाजिक परिणामों के बारे में सोचें। इसलिए, प्रतिमान को बदलना होगा। वह हमें सही विकल्प दिखेगा।

<u>अध्याय 3</u>

'शिक्षा के लिए पारिस्थितिकी तंत्र' में **इरविन सेंगर्स** वर्णन करते हैं कि कैसे शैक्षिक प्रणाली बदल सकती है अगर वे सहयोग और सामूहिक सफलता को एक प्रमुख स्थान पर रखते हैं । लेखक की दलील है कि इस तरह के बदलाव को हर उस पहलु से जोड़ा जाये जो प्रकृति से सीखा जा सकता है। मानव जाति की तुलना में प्रकृति बहुत लंबे समय से अस्तित्व में है! **सेंगर्स** के

अनुसार: अब ध्यान शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों पर नहीं, बल्कि शैक्षिक प्रणालियों पर केंद्रित किया जाता है। शैक्षिक प्रणालियों के कुंजीशब्द हैं: स्व-संगठन, सहनिर्माण, सहयोग, गैर-रेखीय शिक्षा, विकेन्द्रीकृत नेतृत्व।

अध्याय 4

गेब्रियल वैन डी ब्रिंक और **इरविन सेंगर्स**, अध्याय 4 में बताते हैं कि हमारा मानव अस्तित्व **तीन स्तंभों** की बातचीत से निर्धारित होता है: **नैतिकता**, **शक्ति** और **बाजार**। उनकी दृष्टि में इन तीनों में से पहला सबसे कम विकसित है। एक तरह की चर्चा में वे ऐसे तरीके खोजते हैं जिनसे नैतिकता में सुधार किया जा सके। उनका एक निष्कर्ष यह है कि हम पदानुक्रम को एक कार्यात्मक क्रम से बदल सकते हैं जिसमें स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर पर निर्णय लेना हो। तथा सरकार को भी खुद को औपचारिक प्रक्रियाओं को लागू करने तक सीमित नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने नागरिकों को **परस्पर विरोधी हितों** या **नैतिक विचारों** की बात आने पर स्वयं के समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

अध्याय 5

जैकलिन वैन मुइलविज्क-कोएज़ेन और **पीटर वैन डेर सिजदे** ने अध्याय 5 **'ब्रिज बिल्डिंग-प्रामाणिकता की भूमिका'**, में अपने विचार द्वारा यह व्यक्त किया कि उनके अवलोकन से कई छात्रों को विश्वविद्यालय के बाद अकादमिक नौकरी नहीं मिलती है, बल्कि व्यवसाय से संबंधित नौकरियां मिलती हैं। उन्हें ज्ञान प्राप्त करने के लिए शिक्षित किया जाता है, व्यवसाय का मूल, पैसा बनाने के लिए नहीं। उनका उद्देश्य शैक्षिक दृष्टि से शिक्षा और व्यवसाय के बीच एक सेतु का निर्माण करना है। उनकी मुख्य सिफारिश यह है कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों को इस दुनिया से परिचित होने के उद्देश्य से प्रश्न पूछकर व्यवसाय की दुनिया में अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करनी चाहिए।

अध्याय 6

सबरीना शोर्क द्वारा अध्याय 6, **'सर्कुलर इनोवेटर एजुकेशन, क्यों दुनिया को सर्कुलर इकोनॉमी थिंकर्स एंड कर्ता की आवश्यकता है'** सर्कुलर इनोवेशन के लिए शिक्षित करने के बारे में है ताकि **पब्लिक हायर एजुकेशन** में **सर्कुलर इकोनॉमी** इनोवेटर्स के लिए एक **क्रॉस-बॉर्डर प्रोग्राम** बनाया जा सके। यह 107 वैज्ञानिक सहकर्मी-समीक्षित लेखों की समीक्षा और 40 शॉर्टलिस्ट किए गए प्रकाशनों के विश्लेषण और **सर्कुलर इकोनॉमी अनुसंधान परियोजनाओं** के लिए ऑनलाइन खोजों पर आधारित है। आठ दिलचस्प शोध पहल और आठ प्रकाशन**, सर्कुलर इनोवेशन एजुकेशन** पर अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे। प्राप्त मुख्य ज्ञान वैज्ञानिकों, प्रशिक्षकों, मानव संसाधन प्रबंधकों और उन लोगों के लिए प्रासंगिक है जो **सर्कुलर इनोवेशन** क्षेत्र में अपनी शिक्षा जारी रखना चाहते हैं। **सर्कुलर इकोनॉमी** भविष्य है और सर्कुलर इनोवेशन को शिक्षा द्वारा लागू किया जाना चाहिए। इसका तात्पर्य ऐसे लोगों की तलाश करना है जो इन्हें पूरा कर सकें, जिन्हें प्रशिक्षित किया जाएगा, और जो (वाणिज्यिक) कार्यान्वयन में भूमिका निभा सकते हैं।

अध्याय 7

जाप बूनस्ट्रा अध्याय 7 **'आइए इसके साथ खेलें'** से शुरू होता है, 'संगठनों में बहुत से लोग अपने पर्यावरण को गतिशील अनुभव करते हैं, जिससे यह स्पष्ट नहीं हो पाता कि भविष्य क्या होगा। ' ऐसी अनिश्चित स्थिति में, एक नियोजित प्रक्रिया द्वारा भविष्य को तैयार करना शायद ही संभव है। बूनस्ट्रा का विकल्प स्व-संगठन है, जिसमें खेल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भविष्य को आकार देने में खिलाड़ियों को स्व-संगठन सामूहिक बनाना चाहिए जो पूर्व-निर्धारित लक्ष्यों के साथ, एक अच्छी तरह से परिभाषित परिणामों पर निशाना नहीं लगा रहे। स्व-संगठन के अलावा कुंजीशब्द हैं: परिवर्तन, संचार, निर्णय लेना, संघर्ष समाधान, (आपसी) विश्वास, सीखना, स्वामित्व और यहां तक कि मज़ा।

अध्याय 8

जेन ब्रैनसेन अध्याय 8, **मैं इसे अपने आप नहीं कर सकता**, में पूछते है: "**होमो सेपियंस** के नमूने के रूप में अपनी पहचान बनाए रखने का क्या अर्थ है? और इसे मानवता के रूप में जीवित रहने की क्या आवश्यकता है, क्योंकि ऐसी प्रजाति जो एंथ्रोपोसीन में अपने पर्यावरण को नष्ट कर रही है, और जो वास्तव में उस ज्ञान का दावा करने का हकदार नहीं है, जो उसने अपने नाम पर खुद को दिया है। इन सवालों पर चर्चा करने के लिए, मैं निम्नलिखित पाँच बुनियादी अवधारणाओं का उपयोग करूँगा:
ऑटोपोइज़िस, अनुकूलनशीलता, प्रतिबद्धता, गतिविधि और अस्थायीता।"

अध्याय 9

यूजीन वर्मीर द्वारा अध्याय 9, **'स्वायत्तता जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण-ऑटोनोइया का विकास'**, सूचना की सुनामी में स्वायत्त सोच के महत्व पर केंद्रित है, सत्य या नकली, और बीच में सब कुछ। हर किसी को उस जटिल दुनिया में अपना रास्ता खोजना होता है जिसमें हम रहते हैं, कभी-कभी अकेले पर ज्यादातर दूसरों के साथ संबंध में। इस जटिल स्थिति में सभी का कर्तव्य है कि वे स्वयं का निर्माण करें। शिक्षा और सोच का विकास केंद्रीय विषय हैं। **वर्मीर** '**ऑटोनोइया**' शब्द का उपयोग करते हैं- ग्रीक से: स्व (ऑटो) और सोच (नोआ), अंतर्निहित कौशल और स्वायत्त सोच के दृष्टिकोण के विकास के लिए।

अध्याय 10

इस आखिरी अध्याय, '**ड्राईवर की सीट**', में **इरविन सेंगर्स** ने व्यापक रूप से चर्चा में कहा की: "हालांकि हमारे पास सभी लोगों को जीवन की आवश्यकताएं प्रदान करने और बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने के लिए तकनीक, ज्ञान और कौशल है, लेकिन वर्तमान समय की बड़ी चुनौतियों को हल करने के लिए हमारी क्षमता पर्याप्त नहीं है।" और निश्चित रूप से, वह संभावित समाधानों के बारे में बहुत सारी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।